लाभ का सिद्धांत – नव-प्रवर्तन, जोखिम एवं अनिश्चितता के सिद्धांत

लाभ का अर्थ

उत्पादन के साधक के रूप में उद्यमी या साहसी को जोखिम उठाने के लिए जो प्रतिफल मिलता है उससे लाभ कहते हैं।

अन्य शब्दों में राष्ट्रीय का वह भाग जो साहसी का उत्पादन कार्य में जोखिम उठाने के लिए दिया जाता है लाभ कहलाता है।

लाभ स्वभाव से अवशेष होता है अर्थात अन्य सभी साधनों की पुरस्कार देने के बाद साहसी या उद्योगपति या व्यवसाय के मालिक को जो भी शेष बचता है वो उसका लाभ है

परिभाषाएं

प्रो. जे. के. मेहता

"इस प्रवैगिक संसार में मानव के उत्पादन कार्यों में अनिश्चितता तत्व एक चौथे प्रकार का त्याग उत्पन्न करता है। यह त्याग जोखिम उठाना है अथवा अनिश्चितता सहन करना है इसको लाभ द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।"

एच एम क्रूम

लाभ उन खतरों का परितोषण होता है जिसका बीमा नहीं हुआ हो

अर्थात् *लाभ प्रवैगिक परिवर्तनों जो कि अनिश्चितताओं और जोखिम को उत्पन्न करते हैं के कारण उत्पन्न होती है।*

लाभ की विशेषताएँ

- **अनिश्चित अवशिष्ट** *लाभ अन्य साधनों की आयों की भांति अनुबंध की आय नहीं होती है जो कि पहले से निर्धारित की गई हो, यह अनिश्चित होता है तथा भूमि, श्रम तथा पूंजी आदि को देने के बाद बचता है।*
- **जोखिम का प्रतिफल** से लाभ राशि को जोखिम उठाने के बदले प्राप्त होता है।
- **अनिश्चितताओं का परिणाम**
- **अपूर्ण प्रतियोगिता की उपस्थिति में ही संभव**
- **ऋणात्मक प्रवृत्ति**

कुल लाभ (Gross Profit) तथा वास्तविक लाभ (Economic/ Net Profit)

कुल लाभ

साधारण बोलचाल में लाभ शब्द को अर्थशास्त्र में कुल लाभ कहा जाता है।

ये साहसी की *कुल आय* में से *उत्पादन लागत* घटाने के बाद शेष रही राशि के बराबर होता है

लाभ = कुल आय – कुल लागत

कुल लाभ के अंग

साहसी के निजी उत्पादन के साधनों का प्रतिफल जैसे निजी भूमि का लगान, स्वयं की पूंजी पर प्राप्त ब्याज, साहसी की खुद की मजदूरी या परिश्रमिक।

संरक्षण व्यय (Maintenance Charges)

साहसी के कुल लाभ में संरक्षण व्यय भी सम्मिलित रहते हैं। वे उत्पादन को सुगमता से चलाने में अति आवश्यक रहते हैं इसके अंतर्गत दो प्रकार के व्यय सम्मिलित किए जाते हैं- अचल संपत्ति में होने वाले घिसावट व्यय एवं बीमा व्यय जो साहसी को चल व अचल संपत्ति का आग, चोरी, दंगे फसाद के विरुद्ध करना होता है।

अव्यक्तिगत लाभ (Extra-Personal Gains)

दो प्रकार के होते हैं-

एकाधिकार लाभ (Monopoly Gains) कभी कभी किसी उत्पादक को वस्तु के उत्पादन या वितरण में एकाधिकार रहता है जिससे वह प्राय: अधिक मूल्य लेकर विशेष लाभ कमाता है आत: उत्पादक के कुल लाभ में इस प्रकार से प्राप्त अतिरिक्त लाभ भी सम्मिलित की जाती है।

आकस्मिक लाभ (Chance Gains) कभी कभी अनुकूल परिस्थितियों के चलते साहसी को कुछ आकस्मिक लाभ प्राप्त हो जाता है। जैसे आकस्मात की लड़ाई के आरंभ होने में शस्त्र निर्माताओं को बिना आशा के लाभ प्राप्त हो जाता है।

शुद्ध अथवा वास्तविक लाभ (Net Profit)

- कुल लाभ का अंतिम अंश वास्तविक लाभ होता है।
- ये उद्यमकर्ता को जोखिम उठाने अनिश्चितता वहन करने, नव प्रवर्तन करने, समन्वय करने तथा अपने विशिष्ट योग्यता के कारण प्राप्त होता है।

इस प्रकार,

शुद्ध लाभ = कुल आय – अस्पष्ट लागतें – स्पष्ट लागते

शुद्ध लाभ = कुल लाभ – अस्पष्ट लागते

शुद्ध लाभ में निम्नलिखित भुगतान सम्मिलित रहते हैं-

- जोखिम वहन करने का पुरस्कार
- साधनों में समन्वय का पुरस्कार
- नव प्रवर्तन का पुरस्कार

लाभ के सिद्धांत (Theories of Profit)

लाभ का जोखिम सहन सिद्धांत (The Risk- Bearing Theory of Profit)

प्रतिपादक - अमेरिका के अर्थशास्त्री **प्रो. होले**

"लाभ साहसी द्वारा जोखिम उठाने तथा उसके उत्तरदायित्व का पुरस्कार होता है।"

होले के मतानुसार, कोई भी व्यक्ति जोखिम उठाना पसंद नहीं करता। क्योंकि साहसी व्यवसाय के जोखिम को उठाता है इसलिए लाभ के रूप में से जोखिम या पुरुष जोखिम का पुरस्कार प्राप्त होता है।

आलोचनाएँ

- लाभ इसलिए प्राप्त नहीं होता कि जोखिम उठाई जाती है वरन इसलिए प्राप्त होता है कि साहसी अपनी चतुरता और कुशलता से अपने व्यवसाय के जोखिम को कम कर देता है।
- लाभ सभी प्रकार के जोखिम का पुरस्कार नहीं है बल्कि यह केवल अज्ञात जोखिम उठाने का ही पुरस्कार है।

लाभ का अनिश्चितता वहन सिद्धांत (Uncertainty- Bearing Theory of Profit)

प्रतिपादक- **एफ. एच. नाइट** ने अपनी पुस्तक **"रिस्क, अनसर्टेनिटी एंड प्रॉफिट ,1921"** में

फ्रैंक नाइट

उद्यमी का मुख्य कार्य उत्पादन संबंधी अनिश्चितताओं को सहन करना होता है
अनिश्चितताओं को सहन करने के प्रतिफल को ही लाभ कहा जाता है

प्रो. नाइट के अनुसार जोखिम दो प्रकार के हो सकते हैं

निश्चित जोखिम (Certain Risk)

ज्ञात या निश्चित जोखिम वे हैं जिनका अनुमान पहले से ही लगाया जा सकता है क्योंकि इन जोखिमों का अनुमान पहले से लगाया जा सकता है इसलिए इनका बीमा कराया जा सकता है बीमा योग्य होने के कारण ऐसे जोखिम के साथ ही बिलकुल निश्चिंत हो जाता है और इसके लिए साहसी को कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं होता।

अनिश्चित जोखिम (Uncertain Risk)

इसमें वे जोखिम सम्मिलित किए जाते हैं जिनके प्रति किसी प्रकार का पूर्व ज्ञान नहीं होता तथा जिनकी व्यापकता भी नहीं जा सकती है और इसीलिए उनका बीमा नहीं किया जा सकता। जैसे

बिक्री की जोखिम अर्थात मांग घटने से नए प्रतियोगियो के उत्पन्न होने का भय, नई मशीनों, नए आविष्कार और नए उत्पादन विधियों आदि आर्थिक प्रणाली अथवा सरकारी नीतियों के परिवर्तन का भय

लाभ क्या है?

नाइट ने इन अनिश्चित खतरों के जोखिमों को अनिश्चितता का नाम दिया है उनके अनुसार जोखिम उन खतरों को कहा जाता है जिनके बारे में पूर्व ज्ञान नहीं होता है वास्तव में अज्ञात जोखिम में ही अनिश्चितता है क्योंकि उनके संबंध में न तो अनुमान लगाया जा सकता है नहीं उनका बीमा कराया जा सकता है

लाभ का निर्धारण

प्रो. नाइट के अनुसार लाभ का निर्धारण उस बिंदु पर होता है जहाँ अनिश्चितता उठाने की मांग-कीमत उसकी पूर्ति-कीमत के बराबर हो जाती है।

प्रो. बोल्डिंग ने इस सिद्धांत का समर्थन करते हुए कहा की, "लाभ वास्तव में व्यवसाय के स्वामित्व की कठिनाईयां तथा अनिश्चितता को उठाने का फलस्वरूप भी प्राप्त होता है"

सिद्धांत की आलोचनाएँ

- लाभ केवल अनिश्चितता का ही पुरस्कार नहीं होता बल्कि साहसी की व्यावसायिक योग्यता का भी परितोषण होता है।

- केवल अनिश्चितता से ही साहसी वर्ग की पूर्ति की समृद्धता प्रभावित नहीं होती वरन आवश्यक पूंजी का अभाव लगन की कमी एवं अज्ञानता सभी प्रभावित होता है।

- अनिश्चितता की उत्पत्ति को एक स्वतंत्र साधन नहीं माना जा सकता

- चूँकि अनिश्चितता की माप नहीं हो सकती है। इसलिए प्रो. नाइट के सिद्धांत के अनुसार लाभ का परिणाम नहीं मालूम किया जा सकता।
- ये सिद्धांत केवल आकस्मिक लाभ की व्याख्या करता है शुद्ध लाभ की नहीं

लाभ का नव प्रवर्तन सिद्धांत (Innovation Theory of Profit)

प्रतिपादक- ***प्रो. शुम्पीटर***

सिद्धांत के अनुसार- "उद्यमी का कार्य नव प्रवर्तन अर्थात नए आविष्कार करना तथा उन्हें लागू करना है"

इन नव प्रवर्तनों के फल्स्वारूप उद्यमी को जो पुरस्कार प्राप्त होता है, वह लाभ कहलाता है।

प्रो. शुम्पीटर

वे सब आविष्कार तथा परिवर्तन जिनके फलस्वरूप उत्पादन लागत को कम किया जा सके या औसत आय को बढ़ाया जा सके जिससे आय तथा लागत का अंतर अर्थात लाभ बढ़ जाए, उसे नव प्रवर्तन कहते हैं

नव प्रवर्तन चार प्रकार के होते हैं-

- नई वस्तु का उत्पादन
- नए बाजार की स्थापना
- कच्चे माल के नए साधन की खोज
- उद्योग का पुनर्गठन

शुम्पीटर का विचार था कि साहसी को लाभ नव प्रवर्तनों को उत्पादन के क्षेत्रों में लागू करने के कारण प्राप्त होता है। इन नवप्रवर्तनों को लागू करके साहसी अपनी वस्तु को दूसरे उत्पादों की तुलना में कम लागत से उत्पादित करता है तथा उसकी बिक्री अधिक मात्रा में करके लाभ प्राप्त करता है।

सिद्धांत की आलोचनाएँ

- ये सिद्धांत लाभ को प्रभावित करने वाले अन्य तत्वों को महत्त्व नहीं दिया जाता है
- यह सिद्धांत लाभ की मात्रा निर्धारित करने में असमर्थ हैं
- सभी उद्यमी नवप्रवर्तनों का प्रयोग नहीं कर पाते और जबकि लाभ सभी उद्यमियों को प्राप्त होता है
- ऐसे सिद्धांत केवल नव-प्रवर्तन या नई नीतियों पर ही बल देता है लेकिन उद्यमकर्ता का प्रमुख कार्य अनिश्चितता झेलना होता है

लाभ का मांग एवं पूर्ति का सिद्धांत (Demand- Supply Theory of Profit)

लाभ का आधुनिक सिद्धांत (Modern Theory of Profit)

सिद्धांत के अनुसार जिस प्रकार उत्पत्ति के अन्य साधनों की कीमत उसकी मां**ग और पूर्ति के अनुसार** निश्चित होती है उसी प्रकार साहसी का लाभ भी उसकी मांग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है

इस प्रकार सिद्धांत के दो पहलू हैं ***साहसी की मांग और साहसी की पूर्ति***

साहसी की मांग

साहसी की मांग मुख्यत: साहसी की सीमांत आगम उत्पादकता पर निर्भर होती है साहसी की जितनी सीमन उत्पादकता अधिक होगी उतनी ही उसकी मांग अधिक होगी।

सीमांत उत्पादकता के अतिरिक्त सहासी की मांग पर परोक्ष रूप से अन्य बातों का भी प्रभाव पड़ता है जैसे- देश में औद्योगिक विकास की अवस्थाएं, उत्पादन का पैमाना और उद्योग में जोखिम का अंश।

जिससे देश में औद्योगिक विकास जितना ही अधिक होगा उतना ही उत्पादन पर आकार वृहद् होगा और उद्योगों का संगठन जितना ही जटिल होगा उतनी ही साहसी की मांग अधिक होगी

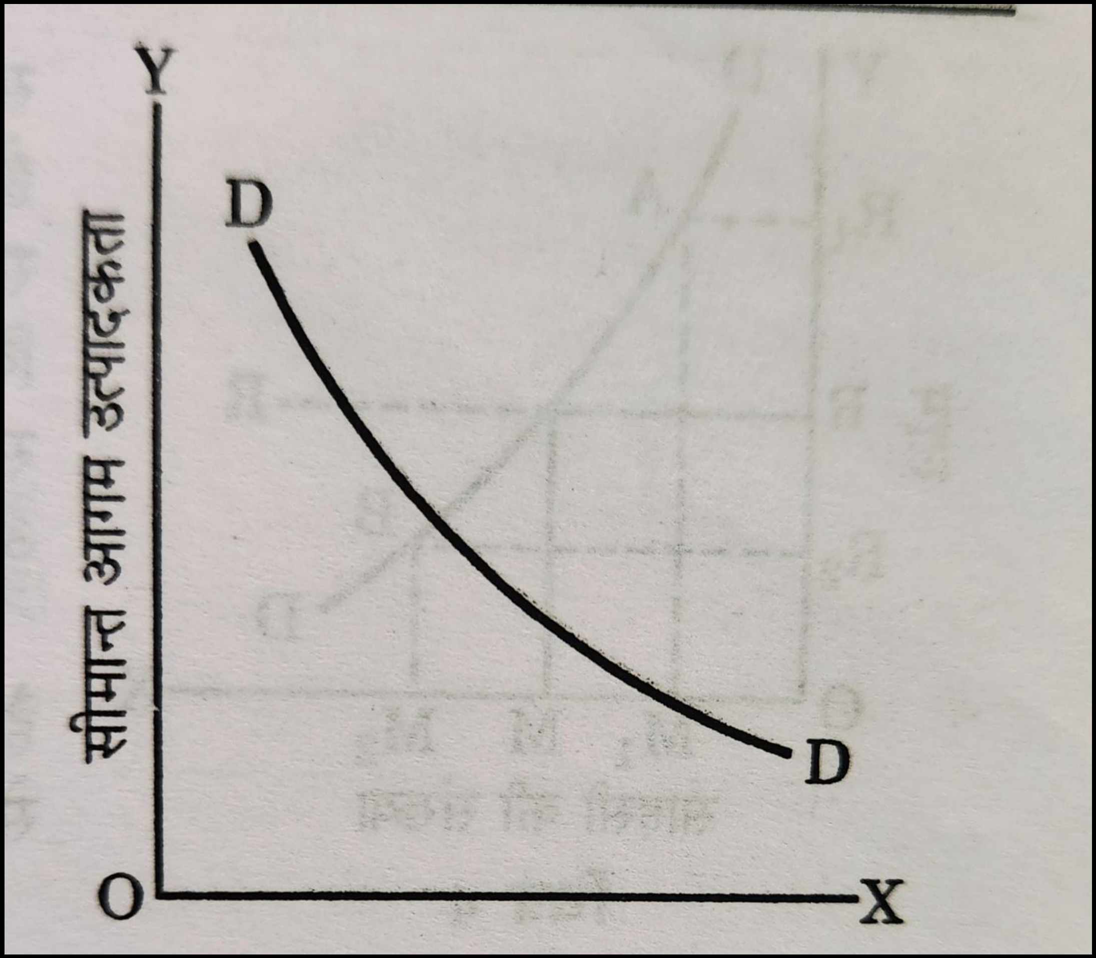

साहसी की पूर्ति

साहसी का पूर्ति मूल्य साहसी का सामान्य लाभ है

अन्य शब्दों में सामान्य लाभ वह न्यूनतम पूर्ति मूल्य है जो कि समाज की अनिश्चिताएं झेलने के लिए साहसी की पूर्ति को बनाए रखने के लिए देना पड़ता है।

यदि संपूर्ण अर्थव्यवस्था में लाभ की दर ऊंची होगी तो साहसियों की पूर्ति भी अधिक होगी। इसके विपरीत यदि लाभ दर नीचे होंगी तो साहसियों की पूर्ति भी कम होगी। अन्य शब्दों में लाभ दर तथा साहसियों की पूर्ति में सीधा संबंध होता है सफलता संपूर्ण अर्थव्यवस्था की दृष्टि से साहसिक की पूर्ति रेखा ऊपर की ओर बढ़ती हुई होगी।

साहसिक की पूर्ति अनेक बातों पर निर्भर होती है जैसे-

- साहसियों की संख्या
- औद्योगिक अनुभव
- जनसंख्या का आकार
- पूंजी की उपलब्धि
- आय का वितरण
- व्यवसाय में जोखिम का अंश

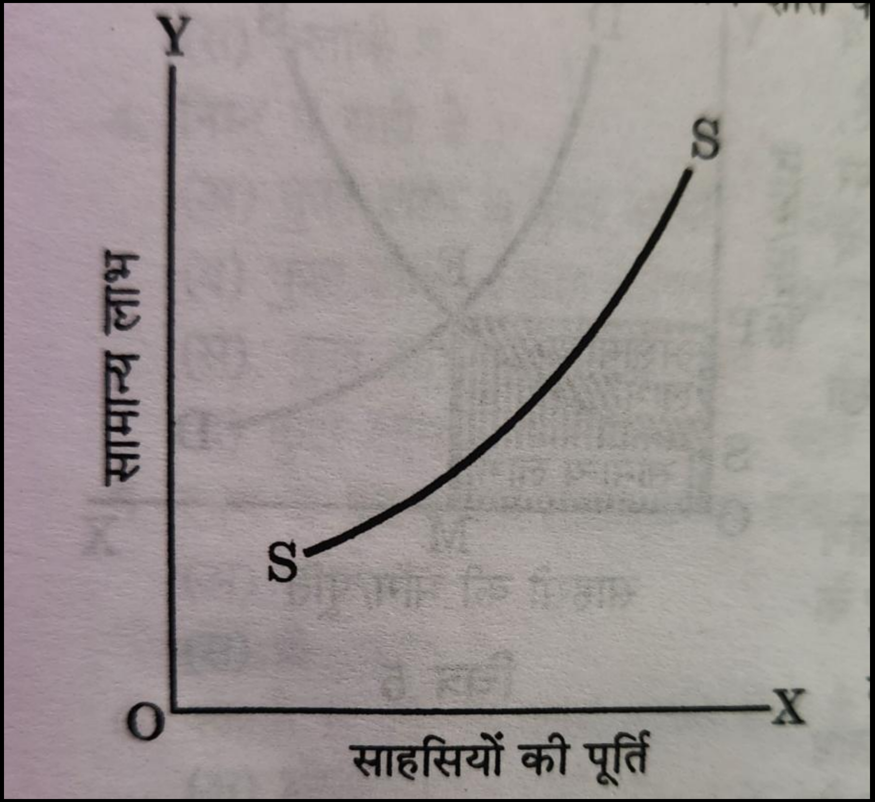

पूर्ण प्रतियोगिता में लाभ का निर्धारण

लाभ ला निर्धारण उस साम्य बिंदु पर होता है जहाँ से राशि का MRP वक्र साहसी की पूर्ति वक्र को काटता है अर्थात जहाँ साहसी की मांग मात्रा उसकी पूर्ति मात्रा में बराबर होती है।